

भारतीय हिमालय पर ग्लेशियर के खतरे, जोखिम की जांच करने वाली पहली जांच

इंदौर। आईआईटी इंदौर के पीएचडी स्टूडेंट ने इंडो-यूके कार्यशाला में सर्वश्रेष्ठ स्टूडेंट प्रस्तुति प्राप्त की। साकेत दुबे ने ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लूइड्स इन द इंडियन हिमालयास में इंडो-यूके कार्यशाला में सर्वश्रेष्ठ स्टूडेंट प्रस्तुति प्राप्त की है। वह आईआईटी इंदौर में डॉ. मनीष कुमार गोयल की देखरेख में काम कर रहे हैं। कार्यशाला में हिमालय से निकलने वाली भारतीय नदियों के जल सुरक्षा मूल्यांकन पर किया गया था। यह ब्रिस्टल यूनिवर्सिटी और आईआईटी बॉम्बे द्वारा आयोजित था, जिसमें इंग्लैंड, नीदरलैंड व इसरो के प्रख्यात वैज्ञानिकों द्वारा अतिथि व्याख्यान शामिल थे। हाल के वार्मिंग ने उच्च पर्वत एशिया में ग्लेशियर पीछे हटने का कारण बना है, ग्लेशियरों या उनके

मलबे से क्षतिग्रस्त ग्लेशियल झीलों के आकार और संख्या में इसी वृद्धि के साथ। ग्लेशियल झील का प्रकोप बढ़ा तब होता है जब ये बांध विफल हो जाते हैं जो पिघलने, हिमस्खलन या नदी के उपर के बहाव के कारण हो सकते हैं। इन घटनाओं के प्रमुख बहाव के बाढ़ प्रभाव हो सकते हैं। डॉ. गोयल, जो अनुसंधान दल का नेतृत्व कर रहे हैं, उन्होंने कहा वर्तमान जांच, इमारतों, पुलों और पनबिजली जैसे सार्वजनिक उपयोगिताओं के मामले में डाउनस्ट्रीम प्रभाव के निर्धारण के साथ-साथ आत्म विनाशकारी और गतिशील विफलता दोनों के लिए एक समग्र तरीके से संपूर्ण भारतीय हिमालय पर ग्लेशियर के खतरे, डाउनस्ट्रीम प्रभाव और जोखिम की जांच करने वाली पहली जांच है।